Brijesh.

प्रश्न: 'आर्थिक प्रगति की दिशा तय करने हेतु नियोजन से कहीं अधिक प्रभावी कारक बाजार की प्रवृत्ति मानी जा सकती है।' क्या आप इस कथन से सहमत हैं? कारण सहित स्पष्ट कीजिए। (250 शब्द)

उत्तर: आर्थिक प्रगति की दिशा में नियोजन एक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से वर्तमान गतिविधियों के साथ समन्वय स्थापित कर भविष्य की गतिविधियों को मार्गदर्शन दिया जाता है तथा लाभ की प्राप्ति हेतु इसके द्वारा संसाधनों का समुचित और प्रभावी अनुप्रयोग किया जाता है। आर्थिक नियोजन का मुख्य उद्देश्य आर्थिक स्थिरता, सुदृढ़ता एवं पूर्ण रोजगार की प्राप्ति है। वर्तमान विश्व में आर्थिक नियोजन को तीव्र आर्थिक विकास का साधन माना जाता है। 1951 से शुरू की गई प्रथम पंचवर्षीय योजना से लेकर अब तक नौ योजनाएँ पूरी हो चुकी हैं, फिर भी लक्ष्यों को अभी भी पूरी तरीके से प्राप्त नहीं किया जा सका है।

बाजारोन्मुखी अर्थव्यवस्था के दो आवश्यक तत्व हैं - लाभ और प्रतिस्पर्धा। वास्तव में, अभी तक जितनी भी खोजें विकसित हुई हैं, उनमें पूंजी / पूंजीपति शीर्ष पर है, क्योंकि यह न केवल उत्पादन को बनाये रखता है, बल्कि उपभोक्ता की सामर्थ्य के अनुसार मूल्य को भी स्थिर रखता है। साथ ही, बाजार की शक्तियों - माँग और पूर्ति द्वारा उत्पादन और संसाधनों का बंटवारा भी किया जाता है। स्पष्टतः बाजारोन्मुखी अर्थव्यवस्था आम आदमी, समृद्ध आदमी और विशिष्ट आदमी सभी के लिए लाभकारी होती है।

बाजारोन्मुखी अर्थव्यवस्था की संकल्पना के विपरीत है - राज्य नियंत्रित अर्थव्यवस्था, जो कि समाजवादी राष्ट्रों में लागू होती है। इसमें विधायिका के निर्देशों पर नौकरशाही मूल्य निर्धारित करती है, जिसमें मांग एवं पूर्ति के बीच असंतुलन की स्थिति भी पैदा हो जाती है। अतः, स्पष्ट है कि आर्थिक प्रगति की दिशा तय करने के लिए आर्थिक नियोजन से अधिक प्रभावी बाजार अर्थव्यवस्था ही है, क्योंकि इसमें समाज के सभी वर्गों का हित होता है। साथ ही, वर्तमान वैश्विक अर्थव्यवस्था में उदारीकरण के मानदंड भी बाजारी प्रवृत्तियों को ही प्रोत्साहित करते हैं।

निष्कर्षतः भविष्य को दृष्टिगत करते हुए आर्थिक प्रगति की दिशा तय करने में नियोजन से कहीं अधिक प्रभावी कारक बाजारी प्रवृत्तियों को माना जा सकता है।